5 राजमुकुट

(व्यथित हृदय)

कानपुर, बुलन्दशहर, मथुरा, बस्ती, मिर्जापुर, देवरिया, बांदा, रामपुर।

नाटककार 'व्यथित हृदय' द्वारा रचित नाटक 'राजमुकुट' महाराणा प्रताप के जीवन पर आधारित है। इस ऐतिहासिक नाटक में महाराणा प्रताप, शक्ति सिंह, अकबर, जगमल आदि के चरित्रों के माध्यम से देशप्रेम, धार्मिक सहिष्णुता एवं धार्मिक एकता की भावना आदि को आधुनिक समाज हेतु उपयोगी मानकर स्थापित करने की कोशिश की गयी है। 'राजमुकुट' नाटक की कथावस्तु का मूल उद्देश्य देशप्रेम एवं स्वाधीनता की रक्षा के लिए बलिदान करने की भावना को प्रेरित करना है। नाटककार ने ऐतिहासिक घटनाओं के आधार पर काल्पनिक तत्त्वों का समायोजन करके आधुनिक समाज में व्याप्त समस्याओं की ओर संकेत किया है। इस नाटक में देश के प्राचीन मूल्यों एवं प्राचीन संस्कृति का भी उल्लेख किया गया है।

'राजमुकुट' नाटक की कथावस्तु (सारांश)

प्रथम अंक : 'राजमुकुट' भारतीय इतिहास की एक स्वर्णिम गाथा को आधार बनाकर लिखा गया ऐतिहासिक एकांकी है। इसमें महाराणा प्रताप के पराक्रम, अनन्य त्याग और बलिदान की कथा को प्रस्तुत किया गया है।

संक्षेप में इस नाटक की कथा इस प्रकार है—

नाटक के प्रथम अंक में महाराणा प्रताप के पूर्व की पृष्ठभूमि का उल्लेख है, जिसमें जगमल के विलासितापूर्ण जीवन का बड़ा ही सजीव किन्तु हास्यास्पद चित्रण प्रस्तुत किया गया है। जगमल शराब के नशे में आधी रात को प्रलाप कर रहा है। उसे प्रजावती के जागरण गीत सुनाई पड़ते हैं, जो जगमल को बिलकुल ही प्रिय नहीं हैं। वह प्रहरी से प्रजावती को दण्ड देने का आदेश देता है। प्रजावती की हत्या कर दी जाती है।

राज्य में दूसरी ओर जगमल की राजव्यवस्था और विलासितापूर्ण जीवन के विरुद्ध जनता में असन्तोष की आग सुलग रही है। प्रजावती की हत्या उसमें भी काम करती है। किसान और मजदूरों में विरोध की आग भड़कती है। चन्दावत और अजय बाप-बेटे राज्य की दुर्व्यवस्था पर चिन्तन कर रहे हैं, तब तक उन्हें प्रजावती के साथ प्रदर्शनकारियों का जुलूस दिखलाई पड़ता है। चन्दावत कृषक प्रदर्शनकारियों को शान्त करके विवेक से काम लेने का उपदेश देते हैं।

सत्ता के विरुद्ध विद्रोह की आग धीरे-धीरे विकराल रूप धारण करती जा रही है। मेवाड़ के राजसिंहासन पर बैठे जगमल को कोई चिन्ता नहीं है। वह पूर्ववत् विलासिता में लीन है। उसके चापलूस सेवक निरीह और भोली-भाली जनता पर अत्याचार कर रहे हैं। अन्त में जगमल के विरुद्ध जनमत तैयार हो जाता है और चन्दावत के नेतृत्व में वह राजभवन में जाकर जगमल का राजमुकुट उतार लेता है। यह राजमुकुट मेवाड़ के उदीयमान सशक्त वीर योद्धा महाराणा प्रताप के सिर पर रखा जाता है। इस प्रकार प्रथम अंक में कथा का प्रारम्भ हो जाता है, साथ-ही-साथ प्रयत्न की भूमिका के रूप में महाराणा प्रताप देश की एकता और स्वतन्त्रता का संकल्प लेते हैं।

द्वितीय अंक : महाराणा प्रताप के राजसिंहासन पर बैठते ही देश का नक्शा बदल जाता है। विलासिता के स्थान पर शौर्य का साम्राज्य हो जाता है। महाराणा प्रताप देश की रक्षा के लिए सैनिकों को तैयार रहने की प्रेरणा देते हैं। वीरता प्रदर्शन के लिए राज्य में 'अहेरिया उत्सव' का आयोजन किया जाता है, जिसमें प्रत्येक सैनिक को अपने बर्छे से एक शिकार लाना आवश्यक है। 'अहेरिया उत्सव' के अवसर पर ही एक अत्यन्त ही दु:ख और दुर्भाग्यपूर्ण घटना घटित होती है। राणा प्रताप सिंह और उनके भाई शक्ति सिंह में एक शूकर के शिकार के प्रश्न पर विवाद छिड़ जाता है। दोनों उसे अपने बाण से मारा हुआ बतलाते हैं। विवाद बढ़ते-बढ़ते युद्ध का रूप ले लेता है। दोनों ओर से तलवारें खिंच जाती हैं। इसी बीच पुरोहित दोनों को शान्त कराने के लिए पहुँच जाते हैं, किन्तु कोई उनका कहना नहीं मानता। अन्त में वह कटार से आत्महत्या करके घटनास्थल पर ही आत्मोत्सर्ग कर देते हैं। इस घटना से दोनों अवाक् रह जाते हैं। अन्त में महाराणा प्रताप शक्ति सिंह को 'ब्रह्महत्या' के आरोप में देश-निर्वासन का दण्ड देते हैं, जिसे शक्ति सिंह स्वीकार कर देश-निर्वासित हो जाते हैं। वे अकबर के पुत्र सलीम से जा मिलते हैं।

तृतीय अंक : महाराणा प्रताप को बराबर देश की स्वतन्त्रता की चिन्ता लगी रहती है। इसी बीच अकबर के दूत मानसिंह महाराणा प्रताप से मिलने के लिए आते हैं। महाराणा मानसिंह-जैसे देशद्रोही, कुल कलंक से मिलने में अपना अपमान मानते हैं। वे अपने पुत्र अमरसिंह को मानसिंह का उचित आतिथ्य-सत्कार करने का आदेश देते हैं, किन्तु स्वयं मिलना नहीं चाहते और सिर-दर्द का बहाना बनाकर अपने झोपड़े में बैठे रहते हैं। मानसिंह इस व्यवहार को भाँप जाता है और संघर्ष की चुनौती देने लगता है। चुनौती सुनकर राणा प्रकट हो जाते हैं और मानसिंह को ललकारते हुए उसकी चुनौती स्वीकार कर लेते हैं। वे कहते हैं—"जाइए राजा जी, जाइए! मैं आज से ही आपकी प्रतीक्षा करूँगा। आशा है आप अब मेवाड़ में उफान लेकर ही आयेंगे।"

युद्ध की तैयारियाँ मेवाड़ के घर-घर में होने लगती है। क्षत्राणियाँ अपने पतियों को देश पर जूझने के लिए प्रेरणा प्रदान करती हैं।

उधर कूटनीतिज्ञ अकबर शक्ति सिंह और मान सिंह को मिलाकर अपनी राह का काँटा निकाल देने का अच्छा अवसर देखता है। वह दोनों को मिलाकर अपने बेटे सलीम के सेनापतित्व में मेवाड़ पर आक्रमण करने का आदेश देता है।

हल्दी-घाटी युद्ध-भूमि बनी है। घमासान युद्ध होता है। महाराणा प्रताप मान सिंह को ढूँढ़ते-ढूँढ़ते शत्रुओं के सैनिकों के बीच घिर जाते हैं। रक्षा के लिए चन्दावत कृष्ण वहाँ पहुँच जाते हैं और राणा का 'राजमुकुट' अपने सिर पर रख लेते हैं और आग्रहपूर्वक राणा को सुरक्षित चेतक के साथ बाहर भेज देते हैं। राणा के भ्रम में चन्दावत कृष्ण का वध हो जाता है। किन्तु शक्ति सिंह जब चन्दावत के इस त्याग को देखते हैं तो उनकी आँखें खुल जाती हैं। वे देखते हैं कि राणा प्रताप क्षत-विक्षत अवस्था में चेतक के साथ दूर चले जा रहे हैं। दो मुगल सैनिक उनका पीछा कर रहे हैं। शक्ति सिंह उन्हें रोकते हैं। 'चेतक' मर जाता है। राणा खिन्न मन बैठे हैं। शक्ति सिंह अपने किये पर पश्चात्ताप करते हैं। दोनों भाई गले मिलते हैं। शक्ति सिंह अपना घोड़ा राणा प्रताप को देकर विदा करते हैं और स्वयं राजस्थान की पहाड़ियों में अज्ञातवास के लिए चले जाते हैं।

चतुर्थ अंक : हल्दी-घाटी का युद्ध समाप्त हो जाता है, परन्तु राणा हार नहीं मानते। अकबर प्रताप की देशभक्ति, त्याग और वीरता का लोहा मानते हैं तथा महाराणा प्रताप के प्रशंसक बन जाते हैं। एक दिन प्रताप के पास एक संन्यासी आता है। प्रताप संन्यासी का उचित सत्कार न कर पाने के कारण व्यथित हैं। उसी समय राणा की पुत्री चम्पा घास की बनी रोटी लेकर आती है, जिसे एक वन-बिलाव छीनकर भाग जाता है। चम्पा गिर जाती है और पत्थर से टकराकर उसकी मृत्यु हो जाती है। इस समय अकबर राणा को भारत माता का पूत बताता है और प्रताप के दर्शन करके अपने को धन्य मानता है। संघर्षरत प्रताप रोगग्रस्त हो जाते हैं। वह शक्ति सिंह तथा अपने सभी साथियों से स्वतन्त्रता-प्राप्ति के वचन लेते हैं। 'भारत-माता की जय' के साथ महाराणा का देहान्त हो जाता है। 'राजमुकुट' की यह कथा भारत के स्वर्णिम इतिहास और एक रण-बाँकुरे वीर की अमर कहानी है।

अभ्यास प्रश्न

प्रश्न 1. 'राजमुकुट' नाटक के नायक का चरित्र-चित्रण कीजिए।
प्रश्न 2. 'राजमुकुट' नाटक के आधार पर महाराणा प्रताप का चरित्र-चित्रण कीजिए।
प्रश्न 3. 'राजमुकुट' नाटक की भाषा एवं संवाद-योजना की विशेषता पर प्रकाश डालिए।
प्रश्न 4. 'राजमुकुट' नाटक के देश-काल और वातावरण का वर्णन कीजिए।
प्रश्न 5. 'राजमुकुट' नाटक की भाषा-शैली पर प्रकाश डालिए।
प्रश्न 6. स्पष्ट कीजिए कि 'राजमुकुट' नाटक में इतिहास और कल्पना का सुन्दर समावेश किया गया है।
प्रश्न 7. 'राजमुकुट' नाटक की नाट्य-कला की दृष्टि से समीक्षा कीजिए।
प्रश्न 8. 'राजमुकुट' नाटक के आधार पर महाराणा प्रताप और अकबर की भेंट का वर्णन कीजिए।
प्रश्न 9. 'राजमुकुट' नाटक के मार्मिक स्थलों का वर्णन कीजिए।
प्रश्न 10. 'राजमुकुट' नाटक के प्रथम अंक की कथावस्तु लिखिए।
प्रश्न 11. 'राजमुकुट' नाटक के द्वितीय अंक की कथा का सार लिखिए।
प्रश्न 12. 'राजमुकुट' नाटक के तृतीय अंक की कथा का सार लिखिए।
प्रश्न 13. 'राजमुकुट' नाटक के तृतीय अंक के कथ्य संक्षेप में लिखिए।